विद्यापति

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» विद्यापति: कवि परिचय और उनका योगदान

प्रश्न 1 (आसान). विद्यापति का जन्म किस राज्य और किस गाँव में हुआ था?
उत्तर – विद्यापति का जन्म बिहार के मधुबनी ज़िले के बिस्फी गाँव में हुआ था।

प्रश्न 2 (आसान). विद्यापति के प्रमुख आश्रयदाता राजा का क्या नाम था?
उत्तर – विद्यापति के प्रमुख आश्रयदाता राजा शिवसिंह थे।

प्रश्न 3 (मध्यम). विद्यापति को 'संधिकवि' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – विद्यापति को आदिकाल और भक्तिकाल के बीच का 'संधिकवि' कहा जाता है क्योंकि उनकी रचनाओं में दोनों कालों की विशेषताएँ मिलती हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). विद्यापति की किन्हीं तीन प्रमुख रचनाओं के नाम बताइए और उनके योगदान को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – विद्यापति की प्रमुख रचनाएँ हैं: कीर्तिलता, कीर्तिपताका और पदावली। उनका योगदान यह है कि उन्होंने जनभाषा मैथिली में मानवीय प्रेम और भक्ति को बड़े सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया, जिससे वे हिंदी साहित्य के मध्यकाल के पहले ऐसे कवि बने जिनकी पदावली में जनसंस्कृति की अभिव्यक्ति हुई।

» विद्यापति की भाषाएँ और काव्य परंपरा

प्रश्न 5 (आसान). विद्यापति ने कितनी मुख्य भाषाओं में रचनाएँ कीं?
उत्तर – तीन भाषाओं में।

प्रश्न 6 (आसान). विद्यापति की लोकभाषा में लिखी गई रचना का नाम बताओ।
उत्तर – पदावली।

प्रश्न 7 (मध्यम). विद्यापति को आदिकाल और भक्तिकाल का संधिकवि क्यों कहते हैं?
उत्तर – क्योंकि उनकी रचनाओं में आदिकाल की दरबारी संस्कृति और अपभ्रंश काव्य-परंपरा का प्रभाव भी है, और भक्तिकाल की भक्ति व श्रृंगार का लोकभाषा में भी। वे दोनों कालों को जोड़ते हैं।

प्रश्न 8 (कठिन). अवहट्ट भाषा का महत्व क्या है और यह विद्यापति के काव्य में कैसे दिखती है?
उत्तर – अवहट्ट पुरानी हिंदी और आधुनिक भाषाओं के बीच की कड़ी है। यह भाषा तत्कालीन जनजीवन की बोलचाल के करीब थी। विद्यापति की 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' जैसी रचनाओं में इस भाषा का प्रयोग दिखता है, जो दरबारी संस्कृति और पुरानी काव्य परंपरा को दर्शाता है।

» पदावली: विद्यापति के यश का आधार

प्रश्न 9 (आसान). विद्यापति की प्रसिद्धि का मुख्य आधार क्या है?
उत्तर – उनकी 'पदावली'।

प्रश्न 10 (आसान). पदावली की रचना किस भाषा में हुई है?
उत्तर – जनभाषा (मैथिली) में।

प्रश्न 11 (मध्यम). पदावली में किन रसों की प्रधानता है?
उत्तर – भक्ति और श्रृंगार रस की।

प्रश्न 12 (कठिन). मिथिला क्षेत्र में विद्यापति के पदों का क्या महत्व है?
उत्तर – मिथिला क्षेत्र के लोक-व्यवहार और सांस्कृतिक अनुष्ठानों में उनके पद इतने रच-बस गए हैं कि उनकी पंक्तियाँ अब मुहावरे बन गई हैं।

» विद्यापति की प्रमुख कृतियाँ

प्रश्न 13 (आसान). विद्यापति की सबसे प्रसिद्ध कृति का क्या नाम है?
उत्तर – पदावली

प्रश्न 14 (आसान). क्या 'कीर्तिलता' विद्यापति की कृति है?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 15 (मध्यम). विद्यापति की किन दो कृतियों के नाम 'कीर्ति' से शुरू होते हैं?
उत्तर – कीर्तिलता और कीर्तिपताका

प्रश्न 16 (कठिन). विद्यापति की वह कौन सी कृति है जिसमें पुरुषों के गुणों का वर्णन है?
उत्तर – पुरुष परीक्षा

» पहला पद: विरहिणी की करुण पुकार

प्रश्न 17 (आसान). नायिका प्रियतम के पास अपनी बात कैसे पहुँचाना चाहती है?
उत्तर – चिट्ठी या 'पतिआ' के ज़रिए।

प्रश्न 18 (आसान). नायिका को सबसे ज़्यादा दुख किस महीने में महसूस हो रहा है?
उत्तर – सावन के महीने में।

प्रश्न 19 (मध्यम). प्रियतम गोकुल छोड़कर कहाँ चले गए थे? नायिका इसे क्या मानती है?
उत्तर – प्रियतम गोकुल छोड़कर मधुपुर चले गए थे। नायिका इसे 'अपजस' या अपयश मानती है।

प्रश्न 20 (कठिन). 'हिए नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास' – इस पंक्ति में नायिका की कौन सी मनोदशा व्यक्त हुई है और क्यों?
उत्तर – इस पंक्ति में नायिका की वियोग वेदना और असहनीय दुख की मनोदशा व्यक्त हुई है। सावन का महीना प्रेमियों के मिलन का मौसम होता है, लेकिन नायिका प्रियतम से दूर है, इसलिए सावन की हरियाली और वर्षा उसके दुख को और भी बढ़ा देती है, जिससे उसका मन और भी बेचैन हो उठता है।

» दूसरा पद: अटूट प्रेम और अतृप्त नयन

प्रश्न 21 (आसान). इस पद में नायिका किससे अपने प्रेम के अनुभव के बारे में बात कर रही है?
उत्तर – अपनी सखी से।

प्रश्न 22 (आसान). नायिका के अनुसार, उसका प्रेम कैसा है - पुराना या हर पल नया?
उत्तर – हर पल नया।

प्रश्न 23 (मध्यम). 'नयन न तिरपित भेल' से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में समझाइए।
उत्तर – इसका अर्थ है कि नायिका ने अपने प्रियतम का रूप जन्मों से देखा है, फिर भी उसकी आँखें तृप्त नहीं हुई हैं। उसकी देखने की इच्छा कभी खत्म नहीं हुई, बल्कि हर बार उसे देखने पर नयापन महसूस होता है।

प्रश्न 24 (कठिन). विद्यापति ने इस पद में 'अटूट प्रेम' की कौन-सी विशेषता बताई है जो उसे सामान्य आकर्षण से अलग करती है?
उत्तर – विद्यापति ने बताया है कि अटूट प्रेम में 'तिल-तिल नूतन होए' अर्थात हर पल नयापन और नवीनता का अनुभव होता है। यह प्रेम कभी पुराना नहीं होता, चाहे उसे कितनी भी बार जिया जाए, हर बार उसमें एक नई गहराई और आनंद का अनुभव होता है, जो सामान्य आकर्षण में नहीं होता।

» तीसरा पद: विरह में क्षीण होती नायिका

प्रश्न 25 (आसान). तीसरे पद में नायिका की मानसिक स्थिति कैसी बताई गई है?
उत्तर – नायिका विरह में अत्यंत दुखी और व्याकुल है।

प्रश्न 26 (आसान). फूलों से भरे जंगल को देखकर नायिका क्या करती है?
उत्तर – नायिका फूलों से भरे जंगल को देखकर अपनी आँखें बंद कर लेती है।

प्रश्न 27 (मध्यम). नायिका को प्रकृति की सुंदर चीज़ें भी क्यों असहनीय लग रही हैं?
उत्तर – नायिका अपने प्रियतम के विरह में इतनी दुखी और कमजोर हो गई है कि उसे प्रकृति की मनोहरता भी पीड़ा देती है।

प्रश्न 28 (कठिन). तीसरे पद में 'मूदि रहए दु नयान' और 'कर देइ झाँपइ कान' - इन क्रियाओं से नायिका के किस भाव को व्यक्त किया गया है?
उत्तर – इन क्रियाओं से नायिका की अत्यधिक पीड़ा, बेचैनी और बाहरी दुनिया से विरक्ति के भाव को व्यक्त किया गया है। वह विरह में इतनी असहज है कि उसे देखने-सुनने से भी कष्ट हो रहा है।

» शब्दार्थ और टिप्पणी: पदों को समझना

प्रश्न 29 (आसान). विद्यापति के दूसरे पद में 'तिरपित' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर – तृप्त, संतुष्ट

प्रश्न 30 (आसान). 'गोवुफल तेजि मधुपुर बस' पंक्ति में 'मधुपुर' का क्या अर्थ है?
उत्तर – मथुरा

प्रश्न 31 (मध्यम). 'कत मधु-जामिनि रभस गमाओलि' पंक्ति में 'रभस' शब्द का क्या भाव है? इसका क्या अर्थ है?
उत्तर – 'रभस' का अर्थ है 'रमणीयता' या 'मिलन का आनंद'। यह दर्शाता है कि नायिका ने कितनी मधुर रातें प्रियतम के साथ आनंद में बिताई थीं।

प्रश्न 32 (कठिन). 'चैदसि-चाँद-समान' में 'चैदसि' शब्द का प्रयोग नायिका की किस अवस्था को स्पष्ट करता है?
उत्तर – 'चैदसि' का अर्थ है 'चतुर्दशी' या 'चौदहवीं'। यह चाँद की चौदहवीं कला के समान नायिका के लगातार क्षीण होते शरीर को दर्शाता है, जैसे चाँद अमावस से पहले क्षीण होता जाता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. प्रश्न: विद्यापति किन तीन भाषाओं में रचनाएँ करते थे और उनके प्रमुख आश्रयदाता कौन थे?

› पहला, हमें याद करना होगा कि विद्यापति को 'त्रिलिंगीय' कवि भी कहा जाता है क्योंकि वे तीन भाषाओं में लिखते थे।

› दूसरा, हम उन भाषाओं के नाम याद करेंगे: संस्कृत, अवहट्ट (जो अपभ्रंश का ही एक रूप है) और मैथिली।

› तीसरा, उनके जीवन से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण जानकारी, उनके आश्रयदाता राजा का नाम याद करेंगे, जो राजा शिवसिंह थे।

उत्तर – विद्यापति संस्कृत, अवहट्ट (अपभ्रंश) और मैथिली इन तीन भाषाओं में रचनाएँ करते थे। उनके प्रमुख आश्रयदाता मिथिला नरेश राजा शिवसिंह थे।

उदाहरण 2. विद्यापति को 'संधिकवि' क्यों कहा जाता है?

› विद्यापति जी ने आदिकाल (जिसमें अपभ्रंश भाषा और दरबारी संस्कृति का प्रभाव था) और भक्तिकाल (जो भक्ति और लोकभाषा के लिए जाना जाता है) दोनों में रचनाएं कीं।

› उनकी 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' जैसी रचनाओं में हमें आदिकाल की झलक दिखती है, जहाँ दरबारी संस्कृति और अपभ्रंश काव्य परंपरा का प्रभाव है।

› वहीं, उनकी 'पदावली' में भक्ति और श्रृंगार के पद हैं जो भक्तिकाल की विशेषता है और जनभाषा मैथिली में लिखे गए हैं।

› इस तरह, उन्होंने दोनों कालों की विशेषताओं को अपनी कविताओं में समेटा, जिससे वे दोनों कालों के बीच एक पुल या 'संधि' का काम करते हैं।

उत्तर – विद्यापति जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से आदिकाल और भक्तिकाल दोनों की काव्य-परंपराओं को जोड़ा, इसलिए उन्हें 'संधिकवि' कहा जाता है।

उदाहरण 3. विद्यापति की पदावली में किन मुख्य विषयों का चित्रण मिलता है?

› पदावली का अर्थ समझें: यह उनके पदों का संग्रह है।

› विषय-वस्तु पर ध्यान दें: उनकी पदावली में मुख्य रूप से भक्ति और श्रृंगार रस का चित्रण मिलता है।

› जनसंस्कृति और जनभाषा का महत्व: इसमें आम लोगों की भावनाएं और मिथिला की जनसंस्कृति मैथिली भाषा में व्यक्त हुई हैं।

उत्तर – विद्यापति की पदावली में भक्ति, श्रृंगार, और जनसामान्य की भावनाओं का चित्रण जनभाषा (मैथिली) में मिलता है।

उदाहरण 4. विद्यापति की किन्हीं तीन प्रमुख कृतियों के नाम बताइए।

› हमें विद्यापति जी की उन रचनाओं को याद करना होगा जिनके नाम हमने अभी सीखे हैं।

› उनकी एक बहुत प्रसिद्ध कृति है 'पदावली' जिसे हमने पहले भी पढ़ा है।

› दूसरी हम 'कीर्तिलता' को याद रख सकते हैं जो उनकी एक और महत्वपूर्ण रचना है।

› और तीसरी हम 'पुरुष परीक्षा' का नाम ले सकते हैं, जो नैतिकता और गुणों पर आधारित है।

उत्तर – विद्यापति की तीन प्रमुख कृतियाँ हैं: 'पदावली', 'कीर्तिलता', और 'पुरुष परीक्षा'।

उदाहरण 5. पहले पद में नायिका की मुख्य शिकायतें और उसकी आशा क्या है?

› नायिका सबसे पहले पूछती है कि 'कौन मेरे प्रियतम तक मेरी चिट्ठी ले जाएगा?' यह उसकी पहली शिकायत है कि उसका दुख कोई समझने वाला नहीं है।

› वह कहती है कि 'हिए नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास' - यानी उसका दिल असहनीय दुख नहीं सह पा रहा क्योंकि सावन का महीना आ गया है।

› आगे वह बताती है, 'एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए' - कि प्रिय के बिना वह अकेली घर में नहीं रह पा रही।

› उसका प्रियतम गोकुल छोड़कर मधुपुर चला गया है, जिसके लिए वह उसे 'अपजस' (अपयश) मिलने की बात कहती है।

› लेकिन पद के अंत में विद्यापति कवि बताते हैं कि 'आओत तोर मन भावन रे एहि कातिक मास' - यानी नायिका को कार्तिक मास में प्रिय के लौटने की आशा दिलाई गई है।

उत्तर – नायिका की मुख्य शिकायत प्रियतम से वियोग, सावन के महीने में अकेलापन और प्रियतम का गोकुल छोड़कर मधुपुर जाना है। उसकी आशा यह है कि उसके प्रियतम कार्तिक मास में लौट आएंगे।

उदाहरण 6. नायिका ऐसा क्यों कहती है कि उसने अपने प्रियतम को जन्मों से निहारा है, फिर भी उसके नयन तृप्त नहीं हुए?

› पहला चरण: नायिका का कथन 'जनम अबधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल' दर्शाता है कि उसकी देखने की इच्छा कभी पूरी नहीं हुई।

› दूसरा चरण: यह 'अटूट प्रेम' की विशेषता है, जहाँ प्रियतम का रूप हर पल नायिका को नया और अद्भुत लगता है।

› तीसरा चरण: प्रेम में नयापन और गहराई बढ़ती रहती है, इसलिए कितना भी देख लें, मन में और देखने की चाह बनी रहती है।

› चौथा चरण: यह दर्शाता है कि सच्चा प्रेम कभी पुराना नहीं होता, बल्कि हर पल नवीनता का अनुभव कराता है।

उत्तर – नायिका के नयन तृप्त न होने का कारण उसके प्रियतम के प्रति 'अटूट प्रेम' है, जो हर पल उसे नवीन अनुभव कराता है और देखने की लालसा को कभी पूर्ण नहीं होने देता।

उदाहरण 7. तीसरे पद के अनुसार, विरहिणी नायिका प्रकृति की किन ध्वनियों से अपने कान ढक लेती है?

› पद की पहली कुछ पंक्तियों पर ध्यान दें।
› पद में 'कोकिल-कलरव' और 'मधुकर-धुनि' का ज़िक्र है।
› कोकिल-कलरव का अर्थ है कोयल की आवाज़।
› मधुकर-धुनि का अर्थ है भौंरों का गुनगुनाना।
› नायिका इन्हीं ध्वनियों से अपने कान ढक लेती है।

उत्तर – विरहिणी नायिका कोयल के कलरव (आवाज़) और भौंरों के गुंजन (धुनि) से अपने कान ढक लेती है।

उदाहरण 8. विद्यापति के पद में 'एकसरि' शब्द का क्या अर्थ है और यह नायिका की किस दशा को बताता है?

› पहले, 'एकसरि' शब्द को पद में ढूंढो: 'एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए।'
› फिर, शब्दार्थ सूची (या अपनी हिंदी डिक्शनरी) में 'एकसरि' का अर्थ देखो। इसका अर्थ है 'अकेली' या 'एकाकी।'
› अब, इस अर्थ को पद की पंक्ति में रखकर देखो: 'अकेली भवन में प्रिय के बिना, मुझसे रहा नहीं जाता।'
› इससे स्पष्ट होता है कि नायिका अपने प्रियतम के बिना 'एकाकी' है और उसे अकेले रहना बहुत कठिन लग रहा है।
› यह उसकी विरह वेदना और अकेलेपन की गहरी पीड़ा को दर्शाता है।

उत्तर – 'एकसरि' का अर्थ 'एकाकी' है। यह नायिका की उस दशा को बताता है जिसमें वह अपने प्रियतम के बिना घर में अकेली है और उसे यह अकेलापन असहनीय लग रहा है, जिससे उसकी विरह-वेदना और बढ़ जाती है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि विद्यापति के यश का आधार क्या है और उनकी पदावली की क्या विशेषताएँ हैं, इसलिए इसे अच्छे से समझ लेना।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर 2-3 नंबर के लिए आता है जहाँ उनकी प्रमुख कृतियों के नाम पूछे जाते हैं। कम से कम तीन-चार नाम ज़रूर याद रखना!

• यह पद बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें नायिका की मनोदशा, उसके दुख के कारण और उसकी आशा पर आधारित प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर भाव स्पष्ट करने वाले प्रश्न।

• यह पद प्रेम की गहराई और शाश्वतता पर आधारित है। परीक्षा में 'नयन न तिरपित भेल' या 'तिल-तिल नूतन होए' जैसी पंक्तियों का भाव स्पष्ट करने को आ सकता है।

• बोर्ड परीक्षा में, कई बार सीधे-सीधे शब्दार्थ या किसी कठिन शब्द का भावार्थ पूछा जाता है। इसलिए, हर पद के मुख्य और कठिन शब्दों के अर्थ ज़रूर याद करें।

एक नज़र में रिवीज़न

› पदावली = विद्यापति की प्रसिद्धि का आधार; भक्ति, श्रृंगार, जनभाषा।
› विद्यापति: कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, भू-परिक्रमा, लिखनावली, पदावली।
› नायिका का विरह, सावन में दुख, कार्तिक में प्रियतम के लौटने की आशा।
› अटूट प्रेम, हर पल नया अनुभव, नयन और मन की अतृप्ति।
› कठिन शब्दार्थ से पदों का गहन अर्थ समझें।